विषय - हिन्दी रचना
B.A. + B.Sc. Part I
कविता - कानन
विद्यापति

डॉ० अनुपमा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०एस० कॉलेज
जहानाबाद

गंगा स्तुति

बड़ सुखसार पाओल तुअ तीरे,
छोड़इते निकट नयन बह नीरे।
कर जोरि विनमओं विमल तरंगे,
पुनि दरसन होए पुनमति गंगे।
एक अपराध छेमब मोर जानी,
परसल माय पाय तुअ पानी।
कि करब जप-तप जोग धेआने,
जनम कृतारथ एकहि सनाने।
भनइ विद्यापति समदओं तोही,
अन्तकाल जनु बिसरह मोही।

सरल व्याख्या अर्थ → प्रस्तुत पंक्तियों में विद्यापति ने गंगा की महिमा तथा इसके दर्शनों का वर्णन किया है। प्रस्तुत पद में विद्यापति के पाप ताप हारिणी गंगा की महिमा और इसकी गुणवत्ता को रेखांकित करते हुए कहते हैं कि -

तुम्हारे किनारे रहकर मैंने बहुत सुख प्राप्त किया। जितने दिनों तक मैं आपके किनारे पर रहा उतने दिन मैं सुख के सागर में सराबोर रहा। अब मैं आपके किनारे को छोड़कर जा रहा हूँ तो मुझे काफी दुःख का अनुभव हो रहा है। दुःख का अनुभव होने के कारण मेरे नेत्रों से लगातार अश्रुधार बह रहे हैं। कवि कहते हैं कि हे माते गंगा! आपसे हाथ जोड़कर मैं विनती करता हूँ कि एक बार पुनः मुझे आपके दर्शनों का सौभाग्य अवश्य प्राप्त हो। एक बार मैं फिर आपमें स्नानकर अपने जीवन को धन्य करना चाहता हूँ।

आगे की पंक्तियों में कवि माँ गंगा से क्षमा याचना माँगते हुए कहते हैं कि हे माँ गंगे अनजाने में हमसे एक अपराध हो गया है उसे आप क्षमा कर दिजीयेगा। अपराध यह है कि आपके जल का पहला स्पर्श मैंने अपने पैर से किया जो सही नहीं है। ऐसा यह आचरण भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है। आपके जल का स्पर्श सबसे पहले मुझे अपने हाथ से करना चाहिए था।

गंगा की महिमा का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि मैं जप, तप, योग और ध्यान धारण नहीं कर सकता क्योंकि जप, तप, योग और ध्यान धारण करने से जितना पुण्य की प्राप्ति होती है उतने पुण्य की प्राप्ति मात्र एक बार गंगा में स्नान करने से होती है। ऐसा जब जब गंगा में एक बार स्नान करने से ही सफल हो जाता है तो मैं इतने कठिन कार्य जप, तप, योग और ध्यान में नहीं कर सकता।

अन्त में विद्यापति कहते हैं कि हे माते गंगा मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि अन्तिम अवस्था में आप मुझे अपने से दूर करने का कष्ट न करें। मैं आपका भक्त हूँ और आप मेरे आराधना है। मैं चाहता हूँ कि जीवन की अन्तिम अवस्था में मन मेरी और आपकी निकटता बनी रही। अन्तिम समय में भी आपका आशीर्वाद मुझे मिले, आपकी भक्ति मुझे प्राप्त हो।